International Conference on Latest Trends in Science, Engineering, Management and Humanities (ICLTSEMH -2025)
19th January, 2025, Noida, India.

CERTIFICATE NO : ICLTSEMH /2025/C0125231

# 1780 से 1880 तक शाहाबाद जिले के स्थानीय तंत्र में भू-राजस्व प्रशासन के प्रभाव का अध्ययन

**Bachu Raja Baitha**

Research Scholar, Ph. D. in History, Mansarovar Global University, Sehore, M.P., India.

## सारांश

1780 से 1880 तक शाहाबाद जिले के स्थानीय तंत्र में भू-राजस्व प्रशासन का प्रभाव बेहद महत्वपूर्ण और व्यापक था। इस सदी के दौरान, शाहाबाद, जो वर्तमान बिहार का हिस्सा है, ने कई सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक परिवर्तनों का सामना किया, जिनका प्रमुख कारण ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन और उनकी भू-राजस्व नीतियाँ थीं। 18वीं सदी के अंत में, ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत के बड़े हिस्सों पर नियंत्रण स्थापित करना शुरू किया। 1780 के दशक में, शाहाबाद जिले में भी ब्रिटिश शासन का प्रभाव बढ़ने लगा। ब्रिटिशों ने अपनी आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भू-राजस्व प्रशासन को प्राथमिकता दी। इसका मुख्य उद्देश्य अधिकतम राजस्व वसूली था, जिसके लिए उन्होंने पारंपरिक भारतीय भू-राजस्व प्रणालियों में बदलाव किए। स्थायी बंदोबस्त ने शाहाबाद जिले की सामाजिक संरचना को बदल दिया। ज़मींदारों की आर्थिक और सामाजिक शक्ति में वृद्धि हुई, जबकि छोटे किसानों और भूमिहीन मजदूरों की स्थिति कमजोर हो गई। ज़मींदारों ने किसानों से उच्च कर वसूले, जिससे किसान गरीबी और कर्ज के जाल में फंस गए। इसका परिणाम यह हुआ कि किसान अक्सर अपनी भूमि से बेदखल हो जाते थे और उन्हें शोषण का सामना करना पड़ता था। भू-राजस्व प्रशासन की इन नीतियों ने कृषि उत्पादन पर भी प्रभाव डाला। ज़मींदारों का मुख्य उद्देश्य अधिकतम राजस्व वसूली था, जिसके कारण वे किसानों पर अधिक से अधिक उत्पादन करने का दबाव डालते थे। इससे कृषि उत्पादन में वृद्धि तो हुई, लेकिन किसानों की जीवन स्थिति में सुधार नहीं हुआ। इसके अलावा, भूमि की अत्यधिक उपयोग से मिट्टी की उर्वरता में कमी आई, जिससे दीर्घकालिक कृषि स्थिरता प्रभावित हुई।